वर्ष : 13 अंक : 1 जनवरी–मार्च 2018

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. ए.के. मिश्रा, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य)

कुलपति संदेश

'पन्त प्रसार सन्देश' पत्रिका का जनवरी–मार्च, 2018 (अंक 13:1) आपके हाथों में है। प्रसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य कृषकों के दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन लाना है ताकि वे कृषि उत्पादन सम्बन्धी गतिविधियों के क्रियान्वयन एवं संचालन में बेहतर निर्णय ले सकें। वर्तमान में कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रसार शिक्षा के माध्यम से वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध निष्कर्षों एवं कृषि की अद्यतन जानकारी को कृषकों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रसार गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों, प्रक्षेत्र परीक्षणों, प्रक्षेत्र दिवसों, किसान मेला एवं प्रदर्शनियों, कृषि गोष्ठियों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों के कृषकों को खेती–बाड़ी की आधुनिकतम तकनीकी के साथ–साथ समुचित ज्ञान एवं जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। मेरा विश्वास है कि इन कार्यक्रमों/गतिविधियों के माध्यम से तकनीकी ज्ञान अर्जित कर कृषक, महिला कृषक एवं ग्रामीण युवा आजीविका एवं रोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे। प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्त्वावधान में आयोजित "अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी" का कृषकों को नवीनतम कृषि तकनीकी उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान है, जिसमें किसानों की अत्यधिक संख्या में सक्रिय भागीदारी हमारा उत्साहवर्धन करती है। हमें यह बताते हुए खुशी हो रही है कि विगत त्रैमास में 103वां अखिल भारतीय किसान मेला का भव्य रूप से आयोजन किया गया, जिसमें कृषि विकास हेतु कार्यरत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सैकड़ों फर्मों तथा हजारों किसानों ने हमें अत्यन्त प्रेरित किया है। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक पहुंचा कर हमें अधिक प्रसन्नता हो रही है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(ए.के. मिश्रा)
कुलपति

103वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्त्वावधान में 'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 103वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन फरवरी 24–27, 2018 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। मेले का उद्घाटन फरवरी 24, 2018 को मुख्य अतिथि, डा. कृष्ण कान्त पॉल, माननीय राज्यपाल उत्तराखण्ड द्वारा कुलपति डा. ए.के. मिश्रा, स्थानीय विधायक श्री राजेश शुक्ला एवं मा. प्रबन्ध परिषद सदस्य श्री राजेन्द्रपाल सिंह तथा अन्य गणमान्य जनप्रतिनिधियों, अधिष्ठातागण, निदेशकगण, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, छात्रों एवं कृषकों की उपस्थिति में गाँधी मैदान में किया गया। मेले के उद्घाटन के बाद राज्यपाल ने मेले का भ्रमण किया और विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों व बाहरी फर्मों एवं संस्थानों द्वारा लगाये स्टॉलों पर उत्पादों व तकनीकियों को देखा और जानकारी ली। गांधी हॉल में किसानों व वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए राज्यपाल डा. के.के. पॉल ने कहा कि वातावरण परिवर्तन एवं भूमंडलीय ऊष्मीकरण को देखते हुए वैज्ञानिकों को विभिन्न फसलों के सूखा अवरोधी बीजों का विकास करना चाहिए, जिससे किसानों को कम वर्षा या अधिक तापमान हो जाने पर भी उचित उत्पादन प्राप्त हो सके। राज्यपाल ने पानी की कमी को देखते हुए उसके कम से कम प्रयोग से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीकों का विकास तथा उन्हें किसानों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने फसल अवशेषों को खेतों में जलाये जाने से होने वाले प्रदूषण के प्रति किसानों को जागरूक किये जाने के लिए वैज्ञानिकों से कहा क्योंकि इससे अंततः खेती को भी नुकसान होता है।

किसान मेले का उद्घाटन करते हुए मा. राज्यपाल

समारोह की अध्यक्षता कर रहे कुलपति, डा. ए.के. मिश्रा ने कहा कि कृषि लागत में कमी एवं कृषि उत्पादकता में वृद्धि के द्वारा किसानों की आय दोगुना करने के

लिए मेले में विभिन्न स्टालों से जानकारी दी जा रही है। डा. मिश्रा ने किसानों को फलों, दूध सब्जियों, इत्यादि के मूल्यवर्धित उत्पाद बनाये जाने की सलाह दी, जिससे उनकी आय में वृद्वि हो सके। उन्होंने समन्वित खेती के साथ ही कृषि आधारित व्यवसाय, जैसे मशरूम उत्पादन, मुर्गी पालन, पशुपालन, मछली पालन इत्यादि को अपनाये जाने की भी वकालत की। उद्घाटन के प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास ने सभी का स्वागत किया व अंत में निदेशक शोध, डा. एस.एन. तिवारी ने धन्यवाद दिया। राज्यपाल ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित कृषि साहित्य का विमोचन भी किया।

मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फर्मों ने स्टॉल लगाकर कृषि से सम्बन्धित उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षणों/प्रदर्शनों का अवलोकन, खरीफ की फसलों के नवीनतम प्रजातियों के बीज व मिनीकिट की बिक्री, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दिवस अपरान्ह विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषकों की समस्याओं के निराकरण हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु प्रत्येक दिवस सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मेले के दौरान किसानों की विशेष रूचि विश्वविद्यालय की शोध इकाईयों द्वारा उत्पादित गुणवत्तायुक्त बीजों के क्रय करने में रही। इसके अलावा मेले में विभिन्न राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं बीमा कम्पनियों के स्टॉलों द्वारा कृषकों हेतु ऋण एवं अन्य उपयोगी योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई।

स्टॉल का निरीक्षण करते हुए मा. राज्यपाल

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का समापन फरवरी 27, 2018 को मुख्य अथिति माननीय कृषि मंत्री, भारत सरकार, श्री राधा मोहन सिंह जी द्वारा माननीय मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें माननीय कृषि मंत्री उत्तराखण्ड, श्री सुबोध उनियाल अति विशिष्ठ अतिथि थे। इस अवसर पर स्टालधारकों व वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने कहा कि पर्वतीय क्षेत्र के विलुप्त हो रहे मोटे अनाजों को संरक्षित व संवर्धित करने हेतु उनके बीज उत्पादन पर पंत विश्वविद्यालय ध्यान दे। उन्होंने मृदा की गुणवत्ता बढ़ाने एवं सिंचाई जल के कम से कम प्रयोग की तकनीकों को प्रयोग में जाये जाने हेतु किसानों को जागरूक करने के लिए वैज्ञानिकों से अपील की। केन्द्रीय कृषि मंत्री ने किसानों की आमदनी दोगुना करने की प्रधानमंत्री की योजना के अन्तर्गत समन्वित खेती के मॉडल तैयार किये जाने पर भी बल दिया। साथ ही केन्द्र सरकार के 3.5 वर्ष के कार्यकाल में किसानों व कृषि की दशा सुधारने के लिए चलाई गयी विभिन्न परियोजनाओं व किये गये कार्यों का भी जिक्र किया। उन्होंने केन्द्र सरकार की संस्थागत विकास परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 2018–19 के प्रारम्भ में पंतनगर विश्वविद्यालय को 25 करोड़ की परियोजना दिये जाने की भी घोषणा की।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मा. कृषि मंत्री

प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने कहा कि उत्तराखण्ड में दो प्रकार के भू–भाग है, मैदानी व पर्वतीय, जिसमें पर्वतीय भू–भाग का तकरीबन 90 प्रतिशत भू–भाग असिंचित है, जिसके लिए रणनीति बनाये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पर्वतीय क्षेत्र के संसाधनों, विशेषकर मानव संसाधन का पूरा उपयोग नही हो पा रहा है। यहां के शिक्षित युवा किस प्रकार का कार्य करना चाहते है इस पर शोध किये जाने की आवश्यकता है।

कृषि मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि पंत विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को किसानों में कृषि के प्रति छा रही उदासीनता को दूर करने में अग्रणी भूमिका निभाने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय के अधीन कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों को प्रदेश में हर माह प्रत्येक न्याय पंचायत में लगने वाली कृषि चौपाल में सहयोग करने के लिए भी कहा।

विश्वविद्यालय के कुलपति डा. ए.के. मिश्रा ने पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त विभिन्न अवार्डों तथा इसकी उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने किसान मेले में किसानों को विभिन्न माध्यमों जैसे प्रदर्शन, भ्रमण, गोष्ठी, व्याख्यान इत्यादि से दी गयी नयी तकनीकों की जानकारी के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा तकनीकी प्रसार हेतु किये जा रहे कार्यों की भी जानकारी दी। किसानों की आय दोगुना करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा बनाये गये एवं राज्य व केन्द्र सरकार स्तर पर सराहे गये 2200 पृष्ठ के दस्तावेज की भी उन्होंने जानकारी दी, जिसका इस अवसर पर अतिथियों द्वारा विमोचन भी किया गया।

समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि किसान मेले में 135 बड़ी एवं 92 छोटी फर्मों सहित कुल 227 फर्मों द्वारा स्टॉल लगाकर विविध उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। किसान मेले में पंजीकृत कृषकों सहित कृषक महिलाओं, विद्यार्थियों एवं अन्य आगन्तुकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस चार दिवसीय मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न शोध केन्द्रों के स्टालों द्वारा लगभग रू. 14,15,110 मूल्य के बीज/पौधों की बिक्री की गई तथा निजी फर्मों के स्टालों द्वारा कृषि निवेशों जैसे बीज, उर्वरकों, रसायनों इत्यादि की बिक्री की गई। इस किसान मेले में उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश के कई राज्यों से भी बड़ी संख्या में किसानों ने प्रतिभाग किया। समारोह के अन्त में निदेशक शोध ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा चयनित प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित किये गये कृषक श्रीमती विमला सजवाण, ग्राम–चन्दनी, बनबसा (चम्पावत); श्री विजय पाल सिंह, ग्राम–शेरपुर खेलमऊ (हरिद्वार); श्री कृष्णा मनी भट्ट, ग्राम–कुआंपानी (पिथौरागढ़); श्रीमती तुलसी देवी, ग्राम–तल्ला ग्वालदम (चमोली); श्रीमती दुर्गा देवी, ग्राम–दोगड़ा (नैनीताल); श्री इन्द्रजीत सिंह, ग्राम–नकरौंदा (देहरादून); श्री पूरन सिंह बिष्ट, ग्राम–टाना (अल्मोड़ा); श्री आशीष अग्रवाल, ग्राम–नगला तराई (ऊधमसिंहनगर) एवं श्री मुकेश लाल, ग्राम–देवर (रूद्रप्रयाग) थे।

प्रगतिशील कृषक को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि

मेले में प्रतिभाग किये फर्मों के प्रतिनिधि सम्मानित

कृषि उद्योग प्रदर्शनी के पुरस्कार वितरण समारोह में अतिथियों द्वारा सर्वोत्तम स्टॉल का पुरस्कार मै. ए.एच. एसोसिएट्स (किसान फर्टीलाइजर एजेंसी), दानपुर–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर) को तथा सर्वोत्तम प्रदर्शन का पुरस्कार मै. उत्तरांचल एग्रो इन्डस्ट्रीज, किच्छा (ऊधमसिंहनगर) को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त ऑटोमोबाइल्स एवं ट्रैक्टर समूह में मै. सोनालिका इन्डस्ट्रीज–होशियारपुर (पंजाब); पावर टिलर्स, फार्म मशीनरी एवं टूल समूह में मै. पंजाब मोटर्स–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर), मै. बी.के.टी.–मुम्बई (महाराष्ट्र), मै. फालकॉन गार्डन टूल्स प्रा. लि.–पंजाब; इरिगेशन, पम्प, मोटर्स एवं कन्ट्रोल समूह में मै. प्लूगा पम्प एण्ड मोटर्स प्रा. लि.–वड़ोदरा (गुजरात), मै. भारत मशीनरी स्टोर्स–रूद्रपुर (ऊधमसिंहनगर); फर्टिलाइजर्स समूह में मै. यारा फर्टिलाइजर्स इण्डिया प्रा. लि.–गुड़गांव (हरियाणा); पेस्टिसाइडस् एवं बॉयो–पेस्टिसाइडस् समूह में मै. रैलीस इण्डिया लि.–लखनऊ, मै. क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन लि.–दिल्ली; एग्रो फोरेस्ट्री, नर्सरी, हर्बल एवं मेडिसिनल प्लान्टस् समूह में मै. सैंचुरी पल्प एण्ड पेपर–लालकुआँ (नैनीताल), मै. पल्लीविका नर्सरी–लालपुर (ऊधमसिंहनगर); वेटेरिनरी मेडिसिन्स एवं फीड सप्लीमेन्ट्स समूह में मै. वीरबैक एनिमल हैल्थ इण्डिया प्रा. लि.–मुम्बई, मै. मैनकाइन्ड फार्मा लि.–दिल्ली; एनीमल फीड्स एवं फीड सप्लीमेन्ट्स समूह में मै. नौवा प्रोटीन्स प्रा. लि.–करनाल (हरियाणा), मै. डेलावेल प्रा. लि.–पुणे (महाराष्ट्र); बैंकिंग, हाऊसिंग एवं इन्श्योरेंस समूह में एस.बी.आई.–पन्तनगर (ऊधमसिंहनगर); सीड समूह में मै. नुजीविदू सीड्स लि.–हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) एवं मै. जागौर एग्रो सीड्स प्रा. लि.–हल्द्वानी (नैनीताल) के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार प्रदान करते हुए मा. कृषि मंत्री

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा कुल 39 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 1262 कृषकों, कृषक महिलाओं एवं ग्रामीण युवकों/युवतियों को नवीनतम तकनीकों से जागरूक किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, फसल सुरक्षा, फल उत्पादन, पशुपालन, मुर्गी पालन, बकरी पालन, चारा उत्पादन, पोषण प्रबन्धन, मृदा परीक्षण, गृह वाटिका, उद्यमिता विकास इत्यादि विषयों पर किया गया। इसके अतिरिक्त 11 गोष्ठी जो रेखीय विभागों द्वारा आयोजित की गयी, में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग करते हुये 299 किसानों को व्यवहारिक तकनीकों से लाभान्वित किया। केन्द्र द्वारा प्रसार कर्मियों के 02 प्रशिक्षण भी आयोजित किये गये, जिसमें रेखीय विभागों के 82 कर्मियों ने प्रतिभाग किया। इन कर्मियों को देहरादून जनपद में कृषि एंव इससे सम्बन्धित किसानों की समस्याओं पर प्रमुखता से जानकारी दी गयी तथा उनके समाधान के सम्बन्ध में किसानोपयोगी तकनीकों के बारे में विस्तृत चर्चा की गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा कृषक प्रक्षेत्रों पर 120 भ्रमण कर 1026 किसानों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया गया। इसी प्रकार वैज्ञानिकों द्वारा 38 डायग्नोस्टिक विजिट कर 385 किसानों को उनकी कृषि आधारित समस्याओं का निराकरण किया गया। प्रदेश एवं अन्य प्रदेशों के विभागों द्वारा 14 एक्सपोजर विजिट केन्द्र पर आयोजित किये गये, जिसमें 299 कृषकों एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया। एक्सपोजर विजिट में प्रतिभाग करने वाले किसानो को केन्द्र पर आयोजित प्रदर्शनों एवं सब्जी पौध उत्पादन के अतिरिक्त केन्द्र द्वारा जनपद के किसानों को प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से दी जा रही तकनीकों से अवगत कराया गया। किसानों द्वारा केन्द्र पर 136 भ्रमण किये गये, जिसमें 1044 किसानों ने प्रतिभाग किया। इन किसानों को भी कृषि एवं इससे सम्बन्धित विषयों के साथ–साथ उनकी कृषि सम्बन्धी समस्याओं की जानकारी दी गयी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करते हुए प्रशिक्षणार्थी

- अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत दलहन, तिलहन एवं गेहूँ में कृषक प्रक्षेत्रों पर 20 है. क्षेत्रफल में 83 प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अन्तर्गत पन्त मसूर–08 का कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन सहसपुर एवं डोईवाला विकासखण्ड में 54 कृषक प्रक्षेत्रों में 10 है. क्षेत्रफल में किया गया। इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत तिलहन कलस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में सरसों प्रजाति पन्त पीली सरसों–01 के प्रदर्शनों का आयोजन डोईवाला विकासखण्ड के 14 कृषक प्रक्षेत्रों पर 05 है. क्षेत्रफल में किया गया। गेहूँ की प्रजाति एच.डी. 3086 एवं डी.पी.डब्ल्यू. 621–50 के 15 प्रजातीय अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन 05 है. क्षेत्रफल में किया गया। इसके अतिरिक्त सब्जी उत्पादन/पोषण प्रबन्धन/पादप सुरक्षा के अन्तर्गत टमाटर संकर किस्म इन्डम 13407, अभिनव के 08 है. क्षेत्रफल में 80 प्रदर्शनों का आयोजन जनजातीय विकास परियोजना के अन्तर्गत चकराता एवं कालसी विकासखण्ड के चयनित गांवों में किया जा रहा है। इसी प्रकार सब्जी मटर प्रजाति ग्रीन वुड के 08 है. क्षेत्रफल में 40 प्रदर्शनों का आयोजन जनजातीय विकास परियोजना के अन्तर्गत किया जा रहा है। प्याज की एग्री फाउण्ड लाईट रेड प्रजाति के 15 प्रदर्शनों का आयोजन 1.5 है. क्षेत्रफल में जनजातीय विकास परियोजना के अन्तर्गत ही किया जा रहा है। चारा उत्पादन के अन्तर्गत बरसीम के 25 प्रदर्शनों का आयोजन 03 है. क्षेत्रफल में किया जा रहा है। कुक्कुट पालन के अन्तर्गत कैरी देवेन्द्रा प्रजाति की 25 इकाईयां 25 कृषकों के यहां स्थापित की गयी। पशुओ में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के लिये मिथोचिलेटेड खनिज मिश्रण पर 30 प्रदर्शनों का आयोजन 10 गांवों में किया गया।
- जनजातीय विकास परियोजना के अन्तर्गत चकराता एवं कालसी विकासखण्ड के कोटा क्वानू, मंजगांव क्वानू, मैलोट क्वानू एवं धनपौ के 120 किसानों को 120 बैटरी आपरेटेड स्प्रेयर मशीन निःशुल्क उपलब्ध कराई गयी। इसी प्रकार 31 शक्ति चालित चारा काटने वाली मशीन भी 31 किसानेां को उपलब्ध कराई गयी।

चारा काटने वाली मशीन का प्रदर्शन करते हुए वैज्ञानिक

- केन्द्र के प्रक्षेत्र पर प्याज की एग्री फाउण्ड लाईट रेड प्रजाति के 120 कि.ग्रा. बीज की पौध तैयार कर किसानों एवं रेखीय विभागों को आपूर्ति की गयी। कुल 146.09 कु. पौध का उत्पादन किया गया, जिससे केन्द्र को रू. 8,76,540.00 का राजस्व प्राप्त हुआ। केन्द्र पर किये गये पौध उत्पादन की आपूर्ति लगभग 2580 किसानों को की गयी। इसी प्रकार कद्दूवर्गीय सब्जी पौध उत्पादन के अन्तर्गत करेला (संकर किस्म पाली), लम्बी लौकी (संकर किस्म विनायक), गोल लौकी (संकर किस्म आर्या), चिकनी तोरी (संकर किस्म लोहित एवं आलोक), धारीदार तोरी (संकर किस्म रेखा) एवं खीरा (संकर किस्म सायरा) के पालिथीन बैग में पौध तैयार कर 50,312 पौध 1938 किसानों को आपूर्ति किया गया, जिससे रू. 5,03,120.00 की आय केन्द्र को प्राप्त हुई।
- केन्द्र द्वारा पन्तनगर में फरवरी 24–27, 2018 में आयोजित किसान मेला एवं प्रदर्शनी में स्टाल लगाया गया। राजभवन देहरादून में फरवरी 24–25, 2018 को आयोजित बसंत मेला एवं पुष्प प्रदर्शनी में भी केन्द्र का स्टाल लगाकर कद्दूवर्गीय सब्जियों के पौध की बिक्री की गयी। चकराता विकासखण्ड के रामताल गार्डन में आजीविका परियोजना द्वारा आयोजित किसान मेला एवं कृषक प्रदर्शनी में भी केन्द्र का स्टाल लगाया गया तथा किसानों को तकनीकी जानकारी दी गयी। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ में जनवरी 15, 2018 को आयोजित कार्यशाला एवं प्रदर्शनी में भी केन्द्र का स्टाल लगाकर तकनीकों को प्रदर्शित किया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा देहरादून दूरदर्शन को एक टी.वी. वार्ता दी गयी जबकि देहरादून आकाशवाणी को 07 रेडियो वार्ता दी गयी। केन्द्र द्वारा 40 मृदा परीक्षण के नमूनों की जांच कर सम्बधित किसानों को उसमें प्रयोग किये जाने वाले पोषक तत्वों के बारे में जानकारी दी गयी।

बसंत मेला में केन्द्र द्वारा लगाया गया स्टॉल

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत) की 22वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन मार्च 20, 2018 को ग्राम चल्थी में किया गया। बैठक की अध्यक्षता गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के माननीय कुलपति, डा. ए.के. मिश्रा द्वारा की गई। बैठक में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास; निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. एस.एन. तिवारी; डा. बी. एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान, प्रसार शिक्षा निदेशालय; डा. मनोज राघव, विभागाध्यक्ष, सब्जी विज्ञान विभाग; डा. पी.सी. पाण्डेय, प्राध्यापक सस्य विज्ञान एवं ग्राम चल्थी के प्रगतिशील कृषकों सहित कुल 83 सदस्यों ने प्रतिभाग कर अपने अमूल्य सुझाव दिए। बैठक का मुख्य उद्देश्य कृषि उपज बढाकर कृषकों की अधिक से अधिक लाभ देना है।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक को सम्बोधित करते हुए कुलपति

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों हेतु फसल उत्पादन, पौध सुरक्षा, खाद्य प्रसंस्करण, संतुलित आहार, पशुपालन, मत्स्य पालन विषय पर कुल 18 प्रशिक्षण आयोजित किए गये, जिसमें 364 कृषकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त मत्स्य पालन व गृह विज्ञान के अन्तर्गत 02 रोजगार परक प्रशिक्षणों का भी आयोजन किया गया, जिसमें कुल 40 कृषक लाभान्वित हुए।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा प्रसार कार्यकर्त्ताओं हेतु कुल 03 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें उद्यान, कृषि एवं पशुपालन विभाग के कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया। प्रायोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र पर जलागम परियोजना द्वारा इन्नोवेटिव एग्रीकल्चर टेक्नौलोजी फार लिवलीहुड विषय पर 02 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद चम्पावत के कुल 50 कृषकों ने कृषि की नवीनतम तकनीकी जानकारी प्राप्त की।
- प्रथम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा मटर में सफेद गलन रोग के नियंत्रण हेतु 15 कृषको के प्रक्षेत्र पर 01 है. क्षेत्रफल में ट्राइकोडर्मा वर्मी कम्पोस्ट को 500 ग्राम/कु. की दर से उपचारित करके मटर की बुआई से पूर्व प्रयोग कराया गया। दैनिक आहार में फल सब्जियों के प्रयोग को बढावा देने हेतु 15 कृषकों के प्रक्षेत्र पर 0.3 है. क्षेत्रफल में पोषण वाटिका पर प्रदर्शन लगाया गया। इसके अतिरिक्त मशरूम उत्पादन के अन्तर्गत ढ़िगरी मशरूम की प्लूरोटस प्रजाति पर 10 कृषकों के प्रक्षेत्र पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाया गया।

पोषण वाटिका पर प्रदर्शन का आयोजन

- मटर में एकीकृत रोग प्रबन्धन विषय पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिससे 17 कृषकों ने भाग लिया। साथ ही पुराने प्रशिक्षणार्थियों हेतु 03 सम्मेलनों का आयोजन कर 43 कृषको को लाभान्वित किया गया।
- केन्द्र पर कृषको को नवीनतम तकनीकों का अवलोकन करवाने तथा विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन हेतु शैक्षिक भ्रमण कराया गया, जिसमें नमसा व आतमा परियोजना के अन्तर्गत 04 समूहों में कुल 71 कृषक तथा 11 स्कूल के कुल 464 विद्यार्थियों ने भ्रमण कर कृषि सम्बन्धी नवीनतम जानकारियॉ प्राप्त की।
- केन्द्र द्वारा सब्जी उत्पादन को बढावा देने हेतु टमाटर, फूलगोभी, चप्पन कद्दू तथा पत्तागोभी की उन्नत प्रजातियों की कुल 7930 पौध तैयार कर कृषकों को उपलब्ध कराई गई।
- प्रसार साहित्य के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में ''फल एवं सब्जियों में एकीकृत प्रबन्धन'' नामक प्रशिक्षण पुस्तिका तैयार कर प्रसार कार्यकर्त्ताओं को उपलब्ध कराई गई। किसान भारती पत्रिका 49(6), मार्च, 2018 में ''घर पर बनायें पौष्टिक दुग्ध उत्पादन'' नामक लेख भी प्रकाशित किया गया है।
- केन्द्र के सह निदेशक, फसल सुरक्षा डा. एम.पी. सिंह द्वारा पन्तनगर में फरवरी 02–22, 2018 तक पादप रोग विभाग, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा ''बायो पेस्टीसाइड फार क्रॉप प्रोटेक्शन एण्ड इम्प्रूवमेन्टः इमर्जिंग टेक्नोलॉजी टु बेनिफिट फारमर्स'' विषय पर आयोजित 21 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 15 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 388 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 235 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 40

प्रक्षेत्रों पर कृषि से सम्बन्धित विषयों पर परीक्षणों का आयोजन किया गया।

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन का आयोजन

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में रेखीय विभाग के प्रसार कार्यकर्त्ताओं हेतु एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 18 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र पर एक सात दिवसीय अन्तर्राज्यीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जनवरी 29 से फरवरी 04, 2018 तक किया गया। इसमें जम्मू डिवीजन के 40 कृषकों एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया। इस प्रशिक्षण को सब मिशन कृषि प्रसार (एस.एम.ए.ई.) सी.सी.ए.एन.एम.ए.ई.टी. द्वारा प्रायोजित किया गया।
- केन्द्र के तत्वावधान में मार्च 08, 2018 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें देश के विकास में तथा कृषि एवं अन्य क्षेत्रों में देश की महिलाओं के योगदान की सराहना की गई। साथ ही महिला सशक्तिकरण पर भी चर्चा की गई।
- केन्द्र के तत्वावधान में कौशल विकास से कृषि विकास योजनान्तर्गत बेरोजगार युवाओं हेतु 25 दिवसीय ''एग्रीकल्चर एक्सटेंशन प्रोवाइडर'' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम मार्च 06–30, 2018 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को एग्रीकल्चर स्किल काउन्सिल ऑफ इण्डिया तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा साथ मिलकर प्रायोजित किया गया। कार्यक्रम में 20 बेरोजगारों का जनपद से चयन किया गया। इस कार्यक्रम के अन्त में एग्रीकल्चर स्किल काउन्सिल द्वारा इनकी परीक्षा ली गई। उत्तीर्ण युवाओं को काउन्सिल द्वारा ऑनलाइन सर्टिफिकेट जारी किया गया।
- केन्द्र पर विगत तीन वर्षों से युवाओं को खेती से जोड़ने हेतु ए.आर.वाई.ए. परियोजना चलायी जा रही है। इसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित किया गया है। इस परियोजना अन्तर्गत ग्रामीण युवाओं हेतु 'मशरूम उत्पादन' तथा 'ब्रायलर उत्पादन' विषयों पर दो पांच दिवसीय प्रशिक्षणों का आयोजन मार्च 24–28, 2018 तथा मार्च 26–30, 2018 को किया गया। मशरूम उत्पादन के प्रशिक्षण में 37 युवकों एवं 03 युवतियों को प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण के उपरान्त इन युवाओं के 08 समूह बनाएं गये। इन समूहों द्वारा 08 मशरूम इकाईयाँ स्थापित की गई हैं जिनमें ढींगरी मशरूम का उत्पादन किया जा रहा है। ब्रायलर उत्पादन में 30 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है। इन युवाओं को 06 समूहों में बांट कर उनको ब्रायलर उत्पादन की इकाई बनाने में आर्थिक सहायता चूजे, दवा आदि के रूप में प्रदान की गई हैं।
- केन्द्र द्वारा विभिन्न अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के अन्तर्गत 05 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया। इनमें 75 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने प्रतिभाग किया।
- केन्द्र में एक दिवसीय वैज्ञानिक कृषक इन्टरफेस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा वैज्ञानिकों एवं किसानों से सीधा संवाद किया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने कृषि वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे नित नये शोधों से देश में खेती को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाएं। कृषि वैज्ञानिक बीजों से लेकर उर्वरकों व मृदा को और अधिक उपजाऊ बनाने की दिशा में काम करें। वहीं पीएम मोदी ने किसानों से आह्वान किया कि केन्द्र व राज्य सरकार की ओर से संचालित योजनाओं का लाभ उठाएं।

कृषक वैज्ञानिक इन्टरफेस कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में जनपद ऊधमसिंहनगर के विभिन्न ग्रामों एवं केन्द्र पर कुल 03 प्रशिक्षणो का आयोजन किया गया, जिसमें 62 कृषको को लाभान्वित किया गया। यह प्रशिक्षण जैसे– श्रम कम करना, मत्स्य तालाब में आर्गेनिक एवं इनआर्गेनिक खाद का प्रयोग, मोमबत्ती बनाना इत्यादि विषयों पर आधारित थे।
- प्रसार कार्यकर्त्ताओं हेतु ट्रेन्च विधि द्वारा गन्ना रोपण पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षणों के अतिरिक्त कृषि एवं इससे सम्बन्धित विषयों पर आयोजित 16 किसान गोष्ठी में केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा प्रतिभाग कर 571 किसानों को तकनीकी रुप से जागरुक किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा आयोजित तिलहन (पन्त पीली सरसों), दलहन (मसूर, चना), पोषण वाटिका, सब्जी मटर एवं मत्स्य की नवीन प्रजाति पर पूर्व में अयोजित प्रदर्शनों का देख–रेख किया गया एवं नवीन प्रदर्शनों के अर्न्तगत आत्मा के वित्तीय सहयोग से मक्का (DEKALB9108 Plus) के 36 प्रदर्शन आयोजित किये गए एवं पोषण वाटिका के 10 प्रदर्शन ग्राम–औदली (सितारगंज) में आयोजित किये गए।
- विगत त्रैमास में पूर्व में आयोजित 02 ऑन फार्म ट्रायल की देख–रेख केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा की जा रही है।
- केन्द्र द्वारा ग्राम–सलतममा में किसानों के लिए पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। किसानों को प्राकृतिक खेती की जानकारी दी गई। गांव के करीब 60 किसानों को पंडित दीनदयाल उपाध्याय उन्नत कृषि योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें प्राकृतिक खेती, जैविक खेती के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई। साथ ही इससे होने वाले लाभ के बारे में भी बताया गया। केन्द्र प्रभारी ध्रुव नारायण सिंह ने बताया कि गांव के विकास के लिए मशरूम की खेती, मौन पालन, दूध उत्पादन, सब्जियों की खेती, फुलवारी की खेती प्राकृतिक तरीकों से करायी जायेगी।

प्रशिक्षण में उपस्थित प्रतिभागी

- केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा 11 शोध पत्र / सारांश एवं लेख प्रकाशित किये गए। 03 न्यूज प्रकाशित हुई। वैज्ञानिकों द्वारा 62 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 167 कृषको को लाभान्वित किया गया। सब्जी मटर (काशी उदय) पर ग्राम खैरना में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया।
- केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी द्वारा शोध पत्र का ओरल प्रस्तुतिकरण नेशनल अग्रोनामी काँग्रेस में किया गया एवं डा. प्रतिभा सिंह (एस.एम.एस.) द्वारा शोध पत्र का पोस्टर प्रस्तुतीकरण किया गया। फरवरी 20–22, 2018 तक केन्द्र के वैज्ञानिको द्वारा उक्त काँग्रेस में प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र के मत्स्य वैज्ञानिक डा. एस.के. शर्मा को KVK Scientist Award समग्र विकास वेलफेयर सोसायटी द्वारा चयनित कर National Seminar on

transformation agriculture to doubling farmers income पर फरवरी 10–11, 2018 में प्रदान किया गया।

- प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी द्वारा कृषि उन्नत मेला एव कृषि विज्ञान केन्दों की राष्ट्रीय संगोष्ठी में मार्च 16–17, 2018 को प्रतिभाग किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कृषक प्रशिक्षण, ग्रामीण युवाओ एवं प्रसार कार्यकर्ताओ हेतु 22 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 395 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 47 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 388 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी एवं उनकी समस्याओं का निराकरण भी किया गया।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 25.66 है. क्षेत्रफल पर 281 कृषकों के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शन का आयोजन किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिक समय–समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक कार्य करने हेतु जानकारी प्रदान करते है एवं कृषक की समस्याओं का समाधान भी मौके पर करते हैं। साथ ही केन्द्र द्वारा 03 कृषि प्रदर्शनियों में प्रतिभाग किया गया, जिसमें 3426 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कृषकों को केन्द्र द्वारा चलाई जा रही विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया गया। इस अवसर पर लगभग 700 प्रसार प्रपत्रों का वितरण भी किया गया।
- विगत त्रैमास में विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों पर 06 कृषि कार्यो की न्यूज प्रकाशित की जा चुकी है। विभिन्न फसलों पर 08 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 227 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। कृषकों को नई तकनीक के बारे में विस्तार से बताया गया। साथ ही 43 कृषकों के मृदा नमूनों की जॉच कर मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण किया गया एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रक्षेत्र से निकटवर्ती किसानों को उन्नतशील प्रजातियों की 75400 सब्जी पौध की बिक्री की गयी।
- केन्द्र पर मार्च 17, 2018 को कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कृषि उन्नति मेला का लाइव प्रसारण दिखाया गया। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सम्बोधन का लाईव प्रसारण दूरदर्शन के डी.डी. किसान चैनल के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र से आये कृषकों को दिखाया गया। कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम में जैविक कृषि, बेमौसमी सब्जी उत्पादन, कीट रोग प्रबन्धन, खरपतवार नियंत्रण, वर्ष भर चारा उत्पादन, विभिन्न फसलों, सब्जियों की उन्नत प्रजातियों इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी।
- मार्च 23, 2018 को केन्द्र द्वारा विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, हवालबाग (अल्मोड़ा) में आयोजित किसान मेले में केन्द्र द्वारा स्टॉल लगाया गया एवं केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 24 कृषक गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया, जिसमें 2572 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया एवं कृषकों की समस्याओं का मौके पर ही निदान किया गया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

मार्च 20, 2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट तथा मार्च 21, 2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक क्रमशः ग्राम–चलथी तथा ग्राम–खड़कीनी में कुलपति जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इन बैठकों में डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा; डा. एस.एन. तिवारी, निदेशक अनुसंधान केन्द्र; डा. पी.सी. पाण्डे, प्राध्यापक सस्य विज्ञान; डा. मनोज राघव, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, सब्जी विज्ञान एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान, प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रतिभाग किया गया। इन बैठकों में विगत वर्ष केन्द्रों द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार गतिविधियों की समीक्षा करने के साथ–साथ वर्ष 2018–19 की कार्ययोजना पर गहन विचार–विमर्श के पश्चात् इसे अन्तिम रूप दिया गया।

कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम के अन्तर्गत वैज्ञानिक भ्रमण

निदेशालय के डा. के.एस. शेखर, प्राध्यापक सस्य विज्ञान व संयुक्त निदेशक प्रसार एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान द्वारा मार्च 31, 2018 को कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम के अन्तर्गत विकास खण्ड–गदरपुर के ग्राम–गोविन्दपुर एवं कोपा बसन्त का भ्रमण किया गया तथा ग्राम प्रधान व अन्य कृषकों के साथ खेती की समस्याओं पर विचार–विमर्श किया गया एवं तद्नुसार वैज्ञानिकों द्वारा उनकी समस्याओं का समाधान कराकर उन्हें वैज्ञानिक खेती हेतु सलाह दी गई।

समेटी–उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.) के सदस्य, बी.टी.एम., मशरूम उत्पादक, उद्यान निरीक्षक एवं एच.टी.एम. के प्रसार कर्मियों हेतु 'सब्जियों में समेकित कीट एवं रोग प्रबन्धन', एवं 'व्यावसायिक मशरूम उत्पादन' विषयक 02 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 59 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी) एवं डा. बी.वी. सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 20 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन, मशरूम उत्पादन, जैविक खेती, कृषि वानिकी, पॉलीहाउस में सब्जी उत्पादन, कृषि विविधीकरण तिलहनी फसलों का उत्पादन, धान की खेती एवं मुर्गी पालन से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 628 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण दो दिवसीय से लेकर चार दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810, 05944–235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से किसानों द्वारा कुल 503 प्रश्न पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 925 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 75,520 के साहित्य एवं रू. 45,150 के सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया। एटिक की गतिविधियों का संचालन डा. राम जी मौर्य, प्राध्यापक (सस्य)/प्रभारी अधिकारी एटिक के मार्गदर्शन में किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु

- सूरजमुखी के खेत में फूल निकलते समय पर्याप्त नमी होना आवश्यक है। अतः 10–15 दिन के अन्तराल में सिंचाई करते रहें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में चेतकी धान की बुवाई मार्च से लेकर अप्रैल प्रथम सप्ताह तक कर लें। इसके लिए वी.एल. धान–207, वी.एल. धान–208 एवं वी.एल. धान–209 नामक प्रजातियों का प्रयोग करें तथा जेठी धान की बुवाई मई अन्तिम सप्ताह से जून प्रथम सप्ताह तक धान की वी.एल. धान–54, वी.एल. धान–221 तथा सिंचित क्षेत्रों में गोविन्द, पन्त धान–6, पन्त धान–11 इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।
- अप्रैल माह में आम के बाग की सिंचाई करें। श्यामवर्ण रोग की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स–50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स (0.8 प्रतिशत) का छिड़काव करें। भुनगा कीट के लिए सेविन (0.2 प्रतिशत) और छोटी पत्ती रोग की रोकथाम के लिए जिंक सल्फेट (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
- अप्रैल माह में अमरूद के पेड़ों की कटाई–छंटाई का कार्य करें।
- लीची, लुकाट, आंवला एवं कटहल में 15 दिन के अन्तराल पर अप्रैल माह में दो बार सिंचाई करें।
- मई माह में उर्द व मूंग में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- सिंचित क्षेत्रों में देर एवं मध्यम अवधि में पकने वाली धान की प्रजातियों का बीज पौधशाला में मई माह के अन्तिम सप्ताह से 15 जून तक डाल दें।
- गर्मियों में गन्ने की फसल में 7–10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।
- पर्वतीय क्षेत्रों में मई मध्य से जून अन्त तक मंडुवा की बुवाई करें। मंडुवा की वी. एल. मंडुवा–324, वी.एल. मंडुवा–149 एवं वी.एल. मंडुवा–315 उन्नतशील प्रजातियों की बुवाई करें।
- मध्यम–ऊंचे एवं अत्यधिक–ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अप्रैल अन्त से मई प्रारम्भ तक तथा निचले पर्वतीय क्षेत्रों में मई अन्त से मध्य जून तक मक्के की वी.एल. मक्का–42, वी.एल. मक्का–88 एवं वी.एल. मक्का–41 एवं नवजोत इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।
- जून माह में कम अवधि में तैयार होने वाली अरहर की किस्मों उपास–120, प्रभात इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।

पशुपालन हेतु

- पशुओं में मुँहपका–खुरपका रोग के बचाव हेतु टीकाकरण करवाएं।
- पशुओं को गर्मी से बचाव हेतु दिन में दो बार स्नान की व्यवस्था करें।
- मुर्गियों में रानीखेत एवं चेचक का टीका लगवाएं। गर्मी से बचाव के लिए छज्जे पर घास या छप्पर डालकर गीला करते रहें।
- जून माह में पशुओं पर वाह्य कृमि नाशक दवा का उपयोग करें।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- मार्च 07–10, 2018 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल), धनौरी (हरिद्वार) एवं ढकरानी (देहरादून) में संचालित कल्स्टर डेमोस्ट्रेशन (पल्सेस) के अनुश्रवण हेतु प्रतिभाग किया गया।
- मार्च 13, 2018 को देहरादून में मा. प्रबन्ध परिषद की बैठक में प्रस्तुतिकरण देने हेतु प्रतिभाग किया गया।
- मार्च 16–17, 2018 तक भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में कृषि उन्नति मेला एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों की नेशनल कान्फ्रेंस में प्रतिभाग किया गया।
- मार्च 21, 2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) द्वारा सितारगंज में लगाये गये सी.एफ.एल.डी. (पल्सेस) के अनुश्रवण हेतु प्रतिभाग किया गया।
- अप्रैल 23–24, 2018 तक संघ लोक सेवा आयोग, दिल्ली में गोपनीय कार्य हेतु आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।

निदेशक की कलम से

रबी की फसल खेतों में खड़ी है। जनवरी माह में अपेक्षित वर्षा न होने के कारण फसल एवं फलों के उत्पादन में कमी आने की सम्भावना है। चूँकि पर्वतीय कृषि अधिकांशतः वर्षा पर आधारित है, अतः आगामी दिनों में फसल के बचाव हेतु नमी संरक्षण तकनीक को अपनाना नितांत आवश्यक होगा।

जायद की सब्जियों की बुआई का मौसम आ रहा है। फरवरी से अप्रैल तक अगेती, समय से एवं पछेती विभिन्न सब्जियों जैसे भिण्डी, टमाटर, बैगन, मिर्च, लौकी, तुरई आदि की रूक–रूक कर कई चरणों में बुवाई करें, जिससे अनवरत् रूप से लम्बे समय तक सब्जियों की उपलब्धता बनी रहे तथा बेमौसम में भी लाभ अर्जित किया जा सके। सब्जियों की क्षेत्र विशेष के लिए संस्तुत उन्नत किस्मों के बीजों की बुवाई करें। बीज सदैव विश्वसनीय दुकानों या कृषि विश्वविद्यालय से खरीदें। बुवाई से पूर्व बीजों को जैविक कल्चर अथवा रसायनों से शोधित कर लें। इन शोधित बीजों की बुवाई संस्तुत मात्रा एव विधि से ही करें। गर्मी में यही सब्जियाँ बाजार में अच्छी कीमत देती है।

इसके लिए कृषक स्तर पर सही जानकारी प्रदान करने एवं दक्ष करने की आवश्यकता है। समाचार पत्र, आकाशवाणी, दूरदर्शन कृषि सम्बन्धी सूचना देते हैं, साथ ही कृषि विभाग व विकास खण्ड भी किसानों तक सूचना पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। परन्तु समय से सही सूचना किसानों तक पहुंचाना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके लिए स्वयं किसानों को भी प्रयासरत रहना होगा। किसानों को अपने जनपद के कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करना होगा। यह सम्पर्क समयाभाव में दूरभाष से भी किया जा सकता है। जलवायु एवं कृषि परिस्थिति के अनुरूप कृषि सूचना प्राप्त करके तदनुसार अपने खेतों पर उपयोग कर वांछित लाभ प्राप्त किया जा सकता है। सभी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों को भी नमी संरक्षण की नवीनतम एवं उपयोगी विधियों तथा जायद की सब्जियों हेतु उन्नत बीजों को किसानों तक पहुंचाने का भगीरथ प्रयास करना होगा। उपलब्ध आधुनिक कृषि तकनीक को संचार क्रान्ति के साथ जोड़ देने से यह सुदूर स्थित कृषकों तक तीव्रतम् गति से पहुंचाया जा सकता है।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

103वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : विश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर